Semester-1 MSc 2025-2027.

(Physiological changes in Emotion) संवेग में शारीरिक परिवर्तन :- शारीरिक परिवर्तन दो प्रकार के हैं। शारीरिक परिवर्तन, बाह्य शारीरिक परिवर्तन और आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन संवेग और इन शारीरिक परिवर्तनों के परस्पर सम्बन्ध के विषय में मनोवैज्ञानिकों के भिन्न-भिन्न मत हैं।

(1) बाह्य शारीरिक परिवर्तन :- संवेग में शारीरिक अवस्था में इतना परिवर्तन दिखाई पड़ता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने तो शारीरिक परिवर्तन अथवा उसकी चेतना को ही संवेग मान लिया है। शारीरिक परिवर्तनों को देखकर ही संवेगों को पहचाना जाता है। क्रोध आ रहा है अमुक व्यक्ति शोक में डूबा हुआ है। प्रसन्नता में आपका चेहरा खिल जाता है। संवेगों में व्यक्ति के चेहरे में आँख नाक, मुँह, ललाट आदि अन्तर दिखाई पड़ता है। आवाज में अन्तर आ जाता है और शरीर का आसन बदल जाता है।

(A) चेहरे की अभिव्यक्ति - (Facial Expression) संवेगों की पहचान करने में चेहरे की अभिव्यक्ति काफी सहायक होती है।

(B) स्वर अभिव्यक्ति - स्वर (Vocal Expression) - बात यह बात जानते हैं कि स्वर के सहारे केवल संवेगों को अभिव्यक्त ही नहीं किया जा सकता है।

(C) आसनिक अभिव्यक्ति - (Postural Expression) संवेगों की अवस्था में शरीर के आसन में भी कुछ परिवर्तन होते हैं। परिवर्तन सभी समाज और वर्गों के सभी व्यक्तियों में एक समान हैं।

(2) आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन - (Internal Physical changes) संवेगों की दशा में बाह्य शारीरिक परिवर्तनों के साथ-साथ परिवर्तन होते हैं।

(a) हृदय गति में परिवर्तन – (Change in Heart Beat) – संवेगों की दशा में हृदय की गति में अचानक ही वृद्धि व कमी परिवर्तन होता है। संवेगों में रक्त संचार में परिवर्तन हो जाता है। संवेगों की धड़कन बढ़ जाती है।

(b) रक्तचाप में परिवर्तन (Change in Blood Pressure) – संवेगों में रक्तचाप परिवर्तन दिखाई पड़ता है। रक्तचाप को नापकर जाना से सूक्ष्म-रूप की भी पता लगाया जाता है। सूक्ष्म जोखिम क्षेत्र में पहुंच जाते हैं। जैसे रक्तचाप बढ़ जाता है।

(c) रक्त रसायन में परिवर्तन – (Change in Blood chemistry) – रक्तचाप बढ़ने के अतिरिक्त संवेगावस्था में रक्त में रासायनिक परिवर्तन भी होते हैं।

(d) श्वास गति में परिवर्तन – संवेग की अवस्था में श्वास गति में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन को नीमोग्राफ नामक यंत्र से नापा जाता है।
संवेग की अवस्था में श्वास की गति में परिवर्तन के साथ-साथ श्वास की तीव्रता में भी परिवर्तन होता है।

(e) वैद्युतिक त्वचा अनुक्रिया – (Galvanic Skin Response) – अनुक्रिया के संवेगावस्था की एक विशेषता समझी जाती है। शारीरिक और मानसिक परिश्रम में दिखाई पड़ती है।

(f) उपापचयी परिवर्तन (Metabolic changes) – उपापचयी परिवर्तन से तात्पर्य पाचन क्रिया में परिवर्तन से है। संवेगावस्था में पाचन परिवर्तन का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

(g) मस्तिष्क तरंगों में परिवर्तन – (Change in Brain waves) संवेगावस्था में मस्तिष्क तरंगों में भी परिवर्तन होता है। यंत्र से मापकर यह पता लगा कि संवेग की दशा में मस्तिष्क तरंग की बारम्बारता में परिवर्तन होता है।

Teacher's Signature PKB 14/10/25